**भारत सरकार**

**कृषि मंत्रालय**

**कृषि एवं सहकारिता विभाग**

**राज्य सभा**

**अतारांकित प्रश्न संख्या 1106**

**23 मार्च, 2012 को उत्तरार्थ**

**विषय : वर्षा- सिंचित कृषि राज्यों में हरित क्रान्ति**

**1106 : श्री कुमार दीपक दास :**

**क्या कृषि मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :**

(क) क्या यह सच है कि उत्तर पूर्वी क्षेत्र, जो सिंचित होने की तुलना में वर्षा- सिंचित

अधिक है, में असम जैसे राज्य में कृषि के लिए प्राकृतिक असंतुलन विशेषकर

बेमौसमी बाढ़ और सूखे की स्थितियां विनाशकारी बनी हुई हैं ;

(ख) यदि हां, तो एसे राज्यों में एक संभावित हरित क्रान्ति के लिए कौन-कौन से

कदम उठाए गए हैं ; और

(ग) उत्पादकता के अवरुद्ध होने और मृदा क्षरण तथा भूमि के उपयोग को औद्योगिक

और आवासीय उपयोग में बदले जाने के कारण कृषि भूमि के धीरे-धीरे कम होने

की स्थिति से निपटने के लिए उठाए गए कदमों का ब्यौरा क्या है ?

**उत्तर**

**कृषि एवं खाद्य प्रसंस्करण उद्योग मंत्रालय में राज्य मंत्री ( डॉ0 चरण दास महन्त )**

**(क) से (ग) :** मौसम की अनियमितताएं जैसे अक्सर बाढ़ एवं शुष्क अवधि मुख्य रुप से वर्षा सिंचित राज्यों असम एवं अन्य पूर्वोत्तर राज्यों में कृषि के समक्ष आने वाली प्रमुख बाधाओं में से एक है | विभिन्न फसलों का उत्पादन एवं उत्पादकता बढ़ाने के लिए असम में राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा मिशन (एनएफएसएम) तथा पूर्वी भारत में हरित क्रान्ति लाना (बीजीआरईआई) कार्यक्रम कार्यान्वित किया जा रहा है | इसके अलावा, वृहत कृषि प्रबंधन के तहत इस क्षेत्र के कई राज्यों में कई फसल विकास कार्यक्रम जैसे चावल आधारित फसलन पद्धति क्षेत्रों में समेकित अनाज विकास कार्यक्रम (आईसीडीपी-चावल), समेकित दलहन एवं तिलहन विकास कार्यक्रम, गन्ना आधारित फसलन पद्धति का सतत विकास (एसयूबीएसीएस) इत्यादि कार्यान्वित किए जा रहे हैं | राष्ट्रीय कृषि विकास योजना (आरकेवीवाई) के अलावा अरुणाचल प्रदेश एवं सिक्किम राज्यों में सघन

….2/-

-:2:-

कदन्न संवर्धन के जरिए पोषणिक सुरक्षा के लिए पहल (आईएनएसआईएमपी) नामक आरकेवीवाई की एक अलग उप योजना भी कार्यान्वित की जा रही है |

पनधारा के विकास के लिए, भू उपयोग के विभिन्न प्रकारों में संतुलन बनाए रखने के उद्देश्य से वर्षा सिंचित क्षेत्रों हेतु पनधारा विकास परियोजना (एनडब्ल्युडीपीआरए), नदी घाटी परियोजना एवं बाढ़ प्रवण नदियों (आरवीपी एण्ड एफपीआर) का स्रवण क्षेत्रों में मृदा संरक्षण, क्षारीय एवं अम्लीय मृदा का सुधार एवं विकास (आरएडीएएस) तथा झूम खेती क्षेत्रों में पनधारा विकास परियोजना (डब्ल्युडीपीएससीए) कार्यान्वित की जा रही है क्योंकि इस प्रकार विकसित भूमि के कुछ हिस्से का खेती में उपयोग किया जाता है | बागवानी फसलों के विकास के लिए, पूर्वोतर एवं हिमालयी राज्यों में बागवानी मिशन संबंधी योजना (एचएमएनईएच) कार्यान्वित की जा रही है |

बाढ़ की स्थितियों के तहत शमन एवं अनुकूलन के लिए चावल की कई बाढ़ सह्य किस्में जैसे प्लाबन, जलश्री, जलकुंवरी संस्तुत की जाती हैं | इसके अलावा, बाढ़, अधिक लम्बी शुष्क अवधि, सूखा इत्यादि जैसी जलवायुवीय अवस्थाओं में वैकल्पिक फसल एवं फसलन पद्धति को विकसित किया गया है |

**\*\*\*\*\*\***